“गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य में महानगरीय बोध”

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा की पी–एच०डी० (हिन्दी)
की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
2015

निर्देशिका

डॉ० (श्रीमती) सुमन शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर

शोधार्थिनी

यशोदा कुमारी

हिन्दी विभागाध्यक्ष

(प्रो. शर्मिला सक्सेना)

कला संकाय प्रमुख

(प्रो. रागिनी रॉय)

कला संकाय
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा – 282005

गोविन्द मिश्र के कथा साहित्य में महानगरीय बोध

रचनाकार अपनी रचनाओं में अपने आसपास व समाज में होने वाली घटनाओं के यथार्थ में कल्पनाओं का समावेश कर उसमें कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। वह अपने जीवन के निजी अनुभवों व संघर्षों का ही उसमें चित्रण करता है क्योंकि प्रत्येक रचना लेखक के व्यक्तित्व से प्रभावित रहती है। रचना का क्षण अनुभव और अभिव्यक्ति का क्षण होता है और वही सार्थक क्षण होता है। मानव का सारा अनुभव चिन्तन साहित्य में ही सुरक्षित रहता है। लाखों–करोड़ों वर्षों से मानवीय संघर्षों को जानने का, उसकी संस्कृति व उसके सही हालात को पहचानने का साधन साहित्य ही है।

कथा–साहित्य के दो प्रमुख प्रकार हैं– उपन्यास और कहानी, जोकि मानव जीवन को अभिव्यक्त करते हैं। उपन्यास शब्द उप–समीप तथा न्यास–थाती के योग से बना है जिसका अर्थ हुआ मनुष्य के निकट रखी हुई वस्तु अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, उसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब है, इसमें हमारी ही कथा एवं भाषा शैली कही गयी है। उपन्यास के शाब्दिकानुसार जीवन–स्थितियों से गहन रूप में संबंधित है और यही कारण है कि उसमें निरन्तर जटिल होती जा रही स्थितियों से तथा उन्हीं के कारण उत्पन्न होने वाले विचार की भूमिका का महत्वपूर्ण होना स्वाभाविक है। आधुनिक उपन्यास के मूल में अनुभव व विचार को केन्द्र में रखकर और उसके इर्द–गिर्द कथा और चरित्र का विधान है। अनुभव और उसकी विचार शक्ति से या विचार का आधार खोलना और फैलाना आधुनिक हिन्दी उपन्यास और उसकी संरचना का एक विशिष्ट गुण हैं जो उसे परम्परागत उपन्यास के रचना विधान और वस्तु निरूपण से भिन्न एक सर्वथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्रदान करता है।

कहानी को गल्प, आख्यायिका व लघु कथा भी कहा जाता है। कहानी कहने की प्रथा हमारे यहाँ प्राचीन काल से चली आ रही है। प्राचीन समय में कहानियाँ मौखिक रूप से एक

पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रवाहमान रही हैं। समयानुसार इसके रूप में परिवर्तन होता गया। कहानी की रोचकता, कौतूहलता एवं कल्पनाशीलता आदि श्रोता को असीम आनन्द प्रदान कर आल्हादित करती है। कहानी गद्य रचना का वह स्वरूप हैं जिसमें सामान्यतः लघु विस्तार के साथ किसी एक ही विषय अथवा तथ्य का उत्कृष्ट संवेदन इस प्रकार किया जाए कि वह अपने में सम्पूर्ण हो और उसके विभिन्न तत्व एकोन्मुख होकर प्रभावान्विति में पूर्ण योग दे सकें।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश में होने वाले औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप नगर–महानगर जीवन के केन्द्र बनते गये। महानगरों की आपाधापी और भीड़ भरी व्यस्तता में मनुष्य निरन्तर आत्मकेन्द्रित होता गया। परिवेश से न जुड़ने के कारण वह आत्मनिर्वासित हुआ है, तो संबंधों का टूटना उसे और भी अकेला करता चला गया। महानगरीय जीवन संबंधों में जो कृत्रिमता दिखायी पड़ी है उससे पारिवारिक संबंध तटस्थ और निर्वैयक्तिक से होकर रह गये हैं। साथ ही बीच के भावनात्मक संबंधों की आर्द्रता भी समाप्त सी हो गयी है। वैज्ञानिक विकास नगर–महानगरीयकरण और औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया में मशीनी सभ्यता से आक्रान्त हर संवेदनशील व्यक्ति तनावग्रस्त है। महानगरीय दबाबों के कारण उत्पन्न अनेक विसंगतियाँ उसकी जटिल मानसिक स्थितियों का उद्‌घाटन करती हैं। व्यक्ति की चिन्तन पद्धति और मूल संवेदना सहित आपसी संबंधों को भी प्रभावित कर विज्ञान और यांत्रिकी ने उसे अकेला कर अजनबी बना दिया है। औद्योगिक महानगर का व्यक्ति आत्म परायेपन से पीड़ित है।

गोविन्द मिश्र का जीवन परिचयः– गोविन्द मिश्र का जन्म 1 अगस्त 1939 को अतर्रा (बांदा) उ०प्र० में हुआ था। इनके पिता श्री माधव प्रसाद और माता श्रीमती सुमित्रा देवी मिश्र प्राइमरी स्कूल के शिक्षक थे। जिनके माध्यम से कुलीन निम्न वर्ग के संस्कार उन्हें बचपन से ही मिले। दादा और पिता गांव में ही रहते थे इसलिए ग्रामीण परिवेश की छाप भी उन पर बचपन में ही पड़ गई। उनकी आरम्भिक शिक्षा चरखारी (जिला–हमीरपुर और बांदा (उ०प्र०) में हुई।

लेखन की ओर गोविन्द मिश्र का झुकाव चौदह वर्ष की उम्र से ही दिखाई देने लगा था जब उन्होंने तीन–चार कहानियाँ जैसे– 'पूर्णमासी का योग', 'चंदनियाँ अरज' लिखी जो कालेज की पत्रिकाओं में छपी। बांदा से इण्टरमीडिएट करने के बाद उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से बी०ए० और वहीं से 1959 में एम०ए० (अंग्रेजी) में किया। जनभाषा बुन्देली तो उनका जबर्दस्त भाषायी आधार रही। संस्कृत और अंग्रेजी के छात्र होने के कारण उन दिनों के उच्च स्तरीय मुशायरों और कवि सम्मेलनों से मिले संस्कारों से उनकी भाषा में आधुनिकता, ओज और प्रवाह आया जिसके लिए वे जाने जाते हैं। दो सालों तक वे अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे। 1961 में भारतीय राजस्व सेवा के लिए चुने गये वहाँ वे बराबर अपनी कार्य कुशलता और ईमानदारी के लिए सराहे गये और राजस्व सेवा के सर्वोच्च पद अध्यक्ष, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड तक पहुँचे। इस बीच केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक भी रहे। 1997 में अवकाश प्राप्ति के बाद वह पूर्णकालिक साहित्यकार हैं।

गोविन्द मिश्र के कृतित्व को हम दो प्रकार से देख सकते हैं :– उपन्यास एवं कहानी। उनके उपन्यास, वह अपना चेहरा (1971), उतरती हुई धूप (1973), लाल–पीली जमीन (1976), हुजूर दरबार (1981), तुम्हारी रोशनी में (1985), धीर–समीरे (1988), पाँच आँगनों वाला घर (1995), फूल..... इमारतें और बन्दर (2000), कोहरे में कैद रंग (2004), वो अपना चेहरा (2015) तथा उनके कहानी संग्रह : नये–पुराने माँ–बाप (1973), अन्तःपुर (1976), धांसू (1978), रगड़ खाती आत्महत्याऐं (1979), मेरी प्रिय कहानियाँ (1980), अपाहित (1986), पगला बाबा (1988), हवाबाज (1998), मुझे बाहर निकालों (2004) आदि प्रमुख हैं।

गोविन्द मिश्र का कथा साहित्य अपनी विषय–वस्तु जीवनबोध, भाषा और शैली सभी दृष्टियों से अनूठा है। लेखक ने न जाने कितने ही पक्षों पर मार्मिक कथाएँ एवं उपन्यास प्रस्तुत कर युग के जीवन मूल्यों को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत किया है। अपने कथा–साहित्य में लेखक ने विविध वर्गों के पात्रों के जीवन की विविध घटनाओं एवं तत्कालीन समाज के मानव मूल्यों को प्रतिष्ठित करने वाली बातें ओर अनेक चरित्र प्रस्तुत किये हैं जिसमें हम अपने वास्तविक समाज की झांकी प्रस्तुत कर सकते हैं। मिश्र जी के कथा–साहित्य की शैली विशिष्ट है जिसमें

लेखक किसी विषय को लेकर उसे एक ऐसे सांचे में ढाल देता है कि पूरी कहानी या उपन्यास में निहित संदेश उसकी चरित्र सृष्टि, उसकी भाषिक संरचना और बात बनाने का ढंग ही हमें आकर्षित नहीं करता बल्कि व्यक्ति एवं समाज की एक अद्‌भुत छवि हमारे मानस पटल पर अंकित कर देता है। इस तरह देखा जाए तो हम पाते हैं कि मिश्र जी की कहानियाँ एवं उपन्यास जन–जन तक पहुँची हैं। गोविन्द मिश्र का कथा–साहित्य अपने आप में विशिष्ट एवं सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में निराला है।

प्रस्तुत शोध में गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य की बारीकियाँ और उसके वैविध्य को समझने का प्रयास किया जाएगा और उन्होंने अपनी भाषा एवं शैली में कहानी एवं उपन्यास का ताना–बाना बड़े ही कौशल के साथ बुना है।

प्रस्तुत शोध कार्य में गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य की विषय–वस्तु, चरित्र सृष्टि, परिवेश, भाषा और शिल्प की दृष्टि से विस्तृत अध्ययन किया जाएगा और यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि मिश्र जी के कथा–साहित्य में महानगरीय बोध किस प्रकार दिखायी देता है।

इस शोध कार्य को मिश्र जी के कथा–साहित्य में निहित महानगरीय बोध के हर एक पहलू पर दृष्टिपात करके सम्पन्न किया जाएगा इस तरह से एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति के माध्यम से इस शोध कार्य को सम्पन्न किया जाएगा।

साहित्य सर्वेक्षण में शोध विषय से संबंधित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई है। जिनका विवरण निम्नवत् है–

1. गोविन्द मिश्र के कथा साहित्य में कामकाजी महिलाओं का आत्मसंघर्ष–2011
2. गोविन्द मिश्र के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–2002
3. मोहन राकेश के उपन्यासों में महानगर बोध–2004

अनुसंधित्सु

(यशोदा कुमारी)

गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य में महानगरीय बोध

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण : मौलिकता और महत्त्व

प्रथम अध्याय :– (क) गोविन्द मिश्र : व्यक्तित्व और कृतित्व

(ख) महानगरीय बोध : रूप और स्वरूप

द्वितीय अध्याय :– गोविन्द मिश्र का कथा–साहित्य : एक सर्वेक्षण

(क) गोविन्द मिश्र की कहानियों का संक्षिप्त परिचय

(ख) गोविन्द मिश्र के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

तृतीय अध्याय :– गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य में सामाजिक परिवेश

(i) अजनबीपन एवं अलगाव

(ii) रिश्तों का टूटना और जीवन में विखराब

(iii) घुटन एवं कुण्ठा

(iv) संवेदनहीनता

(v) पारिवारिक संबंधों का विघटन

(v) नारी का संघर्ष

(vii) पीढ़ियों का संघर्ष

चतुर्थ अध्याय :– गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य में राजनीतिक परिवेश

(i) राजनीतिक भ्रष्टाचार

(ii) सत्ताधारियों की अहंग्रस्तता एवं दंभ प्रवृत्ति

(iii) प्रशासकीय भ्रष्टाचार

(iv) आम जनता का शोषण एवं उनका जीवन संघर्ष

(v) नौकरशाही की भयाभय स्थिति

(vi) भ्रष्ट शासन का तंत्र

पंचम अध्याय :– गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य में आर्थिक परिवेश

(i) औद्योगिकीकरण

(ii) निर्धनता

(iii) बेरोजगारी

(iv) अशिक्षा

(v) प्राकृतिक आपदायें

षष्ठ अध्याय :– गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य में सांस्कृतिक परिवेश

(i) मूल्य विघटन एवं संवेदनहीनता (अमानवीयता)

(ii) आध्यात्मिकता के प्रति अनास्था

(iii) धर्म का बदलता स्वरूप

(iv) सांस्कृतिक पतन

(v) पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण

सप्तम अध्याय :– गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य का भाषिक विवेचन

(i) भाषा एवं शैली

(ii) वाक्य रचना एवं शब्द रचना

(iii) मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(iv) प्रतीक एवं बिम्ब

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ सूची

सहायक ग्रन्थ सूची

पत्र–पत्रिकाऐं

शब्दकोश सूची

वेबसाइट्स

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ :–

उपन्यास :–

1. वह अपना चेहरा, गोविन्द मिश्र, अक्षर प्रकाशन, दरियागंज 2/36 अन्सारी रोड, नई दिल्ली – 02, प्रथम संस्करण–1971
2. उतरती हुई धूप, गोविन्द मिश्र, राजपाल एण्ड संस, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण–1973
3. लाल पीली जमीन, गोविन्द मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1976
4. हुजूर दरबार, गोविन्द मिश्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1981
5. तुम्हारी रोशनी में, गोविन्द मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1985
6. धीर समीरे, गोविन्द मिश्र, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1988
7. पाँच आँगनों वाला घर, गोविन्द मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–1995
8. फूल...इमारतें और बंदर, गोविन्द मिश्र, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2000
9. अरण्य तंत्र, गोविन्द मिश्र, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम प्रकाशन–2013

कहानी संग्रह :–

1. नये पुराने माँ–बाप, गोविन्द मिश्र, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970
2. अंतःपुर, वही, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1976
3. धांसू, वही, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1978
4. रगड़ खाती आत्महत्याऐं, वही, संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज, हापुड़, 1978

5. मेरी प्रिय कहानियाँ, वही, राजकमल प्रकाश्न, नई दिल्ली–2, 1976
6. अपाहित, वही, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली–2, 1980
7. खुद के खिलाफ, वही, संभावना प्रकशन, हापुड़, मेरठ, 1980
8. खाक के इतिहास, वही, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1985
9. पगला बाबा, वही, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1988
10. हवाबाज, वही, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998

सहायक ग्रन्थ :–

1. मन्नू भण्डारी की कहानियों में आधुनिकता बोध, प्रो० उमा केवलराय चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, 1997
2. कहानी स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, दरियागंज, नई दिल्ली, 1969
3. साठोत्तरी हिन्दी कहानी और सामाजिक चेतना, डॉ० जितेन्द्र 'वत्स', विद्या प्रिण्टर्स प्रेमनगर, कानपुर, 1989
4. स्वातंन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में अलगाव की अवधारणा, डॉ० बिन्दू दुबे, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2000
5. अमृत लाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता, डॉ० अनीता रावत, चन्द्रलोक प्रकाशन, 1998
6. रचना के सरोकार, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987
7. आधुनिकताबोध और आधुनिकीकरण, रमेश कुन्तल, मेघ, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1969
8. अस्तित्ववादी हिन्दी कहानी, डॉ० चंदा गिरीश, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, 2009
9. समकालीन कथाकार और नई कथा कृतियाँ, गुरचरन सिंह, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
10. कहानी की समाजशास्त्रीय समीक्षा, रमेश उपाध्याय, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999

11. स्वातंन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विचार–तत्त्व, सरोज गुप्ता, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 1999

12. आधुनिक हिन्दी कहानी (नारी जीवन मूल्य), डॉ० कृष्णकान्ता भारद्वाज, अनंग प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

13. हिन्दी उपन्यास का विकास, मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, 1996

14. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, नवीनतम प्रकाशन

15. मेरे साक्षात्कार, गोविन्द मिश्र, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

16. गोविन्द मिश्र का औपन्यासिक संसार, चन्द्रकांत वांदिवडेकर, भूमिका प्रकाशन, दिल्ली, 2000

17. सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र, डॉ० उर्मिला शिरीष, हिन्दी भवन, भोपाल, 2000

पत्र–पत्रिकाऐं :–

1. गगनांचल, अरूण कुमार साहू, नई दिल्ली
2. समीक्षा, सत्यकाम, नई दिल्ली
3. शोध दिशा, डॉ० गिरीराजशरण अग्रवाल, बिजनौर (उ०प्र०)
4. आजकल, राजेन्द्र भट्ट, नई दिल्ली

शब्द कोश :–

1. लोकभारती प्रकाशन हिन्दी कोश, आचार्य रामचन्द्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1996

2. राजपाल हिन्दी शब्दकोश, डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1991